अ ध्या य - ३

अनुसंधान कार्य की प्रक्रिया

३.१ प्रस्तावना.

३.२ अनुसंधान कार्य की पद्धति.

३.३ अनुसंधान कार्य के साधन.

३.३.१ अध्यापक महाविद्यालयों में प्रशिक्षण लेनेवाले छात्रशिक्षक के लिए प्रश्नावली.

३.३.२ माध्यमिक पाठशाला के हिंदी अध्यापक के लिए प्रश्नावली.

३.३.३ अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी-अध्यापकों के लिए साक्षात्कार प्रश्नसूची.

३.४ प्रश्नावलियों का एवं प्रश्नसूची का वर्गीकरण तथा विश्लेषण की पद्धति.

३.५ अनुसंधान कार्य का क्षेत्र.

३.६ अनुसंधान कार्य का न्यादर्श.

३.७ समारोप,

३.१ प्रस्तावना :-

प्रकरण दो में हिंदी-अध्यापन विधि का पाठ्यक्रम, उसके उद्देश्य, उसकी उपयुक्तता साथ ही प्रात्यक्षिक कार्य, उनके उद्देश्य आदि के संबंध में विवेचन किया है। प्रस्तुत प्रकरण में अनुसंधान की प्रक्रिया के संबंध में विवेचन किया है, अर्थात अनुसंधान की पद्धति, अनुसंधान विषय से संबंधित सामग्री की उपलब्धता कैसे की गई उनके लिए कौनसे साधन अपनाये थे, अनुसंधान कार्य का क्षेत्र एवं न्यादर्श आदि के संबंध में विवेचन एवं विश्लेषण निम्नांकित है -

३.२ अनुसंधान कार्य की पद्धति :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य वर्तमान परिस्थिति से संबंध रखता है। चूँकि प्रचलित बी.एड. के हिंदी-अध्यापन-विधि तथा उसकी कार्यनीति का अध्ययन करना ही इस अनुसंधान कार्य में अपेक्षित है। इसीलिए इस अनुसंधान कार्य के लिए "सर्वेक्षण पद्धति" को उपयोग में लाया गया है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य दो विभागों में विभाजित किया था। -

अ] प्रथम विभाग में बी.एड. के प्रशिक्षणांतर्गत हिंदी अध्यापन विधि के पाठ्यक्रम की प्रशिक्षणकालीन एवं प्रशिक्षणोत्तर उपयुक्तता, पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों की, राष्ट्रभाषा की उद्देश्यों की परिपूर्ति कराने में तथा सफल एवं कुशल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम का योगदान आदि बातों को लक्ष्य बनाकर सर्वेक्षण किया गया। यह सर्वेक्षण कोल्हापुर जिले के अध्यापक महा-विद्यालयों मे छात्रशिक्षकों से प्रत्यक्ष रूप में भेट करके किया है। कार्यनीति के

संबंध में छात्रशिक्षकों द्वारा तथा अध्यापकों द्वारा " प्रश्नसूची " के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गयी है। तथा प्रशिक्षणोत्तर पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के बारे में जानकारी पाने के लिए सेवारत अध्यापक, जो प्रचलित पाठ्यक्रम संपन्न करके सेवा में लगे हुए हैं, ऐसे अध्यापकों को भी " प्रश्नावली " मेल द्वारा भेज कर तथा स्वयं मिलकर जानकारी प्राप्त की है।

ब] द्वितीय विभाग में हिंदी-अध्यापन-विधि पाठ्यक्रम की त्रुटियों के संबंध में निष्कर्ष निकाले है, एवं उसे सर्वांगपरिपूर्ण बनाने के लिए सूचनाएँ तथा सिफारिशें दी गई है।

इसतरह सर्वेक्षण पद्धति द्वारा प्राप्त सामग्री का संकलन, वर्गीकरण, वर्णन, स्पष्टीकरण, अर्थान्वयन एवं मूल्यांकन प्रकरण चार में किया है। पाठ्यक्रम की त्रुटियों के संबंध में तथा पाठ्यक्रम को परिपूर्ण बनाने के लिए सूचनाएँ उपाय एवं सिफारिशें प्रकरण पाँच में दी गई है।

३.३ अनुसंधान कार्य के साधन :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य केलिए प्रधान रुप से जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली प्रश्नसूची", "साक्षात्कार एवं भेट योजना" आदि साधनोंका अवलंब किया गया था। इन साधनों का विवरण निम्नांकित है।

प्रश्नसूची :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए कुल तीन प्रश्नसूचियाँ बनाई गई थी-

१] "अध्यापक महाविद्यालयों में प्रशिक्षण लेनेवाले हिंदी अध्यापन विधि के छात्रशिक्षक के लिए प्रश्नावली "

२] " माध्यमिक पाठशाला के हिंदी-अध्यापक के लिए प्रश्नावली "

३] " अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी-अध्यापकों के लिए साक्षात्कार प्रश्नसूची "।

३.३.१ अध्यापक महाविद्यालयों में प्रशिक्षण लेनेवाले छात्रशिक्षकं के लिए प्रश्नावली :-

प्रस्तुत प्रश्नावली में कुछ बाईस प्रश्न थे, जो बद्ध, मुक्त एवं संमिश्र स्वरूप के थे। यह प्रश्नावली दो विभाग में विभाजित है। पहले विभाग में हिंदी - अध्यापन-विधि के पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक भाग से संबंधित प्रश्न पूछे गये थें। इसमें पाठ्यक्रम की उपयुक्तता, अनुपयुक्तता, पाठ्यक्रम के लिए निर्धारित उद्देश्यों की सफलता, विफलता, सैद्धांतिक भाग की कार्यनीति, एवं सफल, कुशल अध्यापक बनने में उसका योगदान आदि प्रमुख उद्देश्यों को लक्ष्य बनाया था। दूसरे विभागमें भी प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति, उसके द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की सफलता, विफलता, कुशल एवं क्षमतापूर्ण अध्यापक बनाने में उसका योगदान तथा संगठन आदि उद्देश्यों की सामने रखकर ही प्रश्नावली की रचना थी। प्रश्नावली की रचना करते समय अनुभवपूर्ण तज्ञों से मार्गदर्शन लिया गया था।

प्रस्तुत प्रश्नावली अनुसंधान-कर्ति ने स्वयं अध्यापक महाविद्यालयों में जाकर अपनी उपस्थिति में छात्रशिक्षकों द्वारा भरवा ली है। प्रश्नावली के समूचे प्रश्न पाठ्यक्रम से संबंधित होने से हर छात्रशिक्षक को हिंदी-अध्यापन-विधि पाठ्यक्रम की

एक झेरॉक्स कॉपी भी उपलब्ध करा दी गयी थी। ग्यारह अध्यापक महा - विद्यालयों से चौरासी [८४] छात्रशिक्षकों ने प्रश्नावलियाँ पूर्ण रूप से भर दी है। इस प्रश्नावली का विश्लेषण निम्नांकित सारणी क्र. ३.३.१ में दिया गया है।

सारणी क्र. ३.३.१

अध्यापक महाविद्यालयों में प्रशिक्षण लेनेवाले हिंदी-अध्यापन-विधि के छात्रशिक्षक के लिए दी हुई प्रश्नावली का विश्लेषण

अनुक्रम	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
१.	I से V	--	छात्रशिक्षकों की सामान्य जानकारी पाने की दृष्टि से।
२.	१	बद्ध	पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के बारे में मत आजमाना।
३.	२ २.१	बद्ध मुक्त	पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के बारे में मत आजमाना। तथा कारण ढूंढना।
४.	३	मुक्त	पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के लिए नवीन पाठ्य - घटकों की छात्रशिक्षक द्वारा माँग के बारे में जानकारी लेना।
५.	४ से ६	मुक्त	पाठ्यक्रम के अनुचित घटकों को जान लेना, उसके कारण जानकर अन्य घटकों की समावेशकता के बारे में जानकारी लेना।
६.	७ से ८	मुक्त	माध्यमिक स्तरपर हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्य सफलता, असफलता में पाठ्यक्रम के घटकों का योगदान क्या है, इसकी जानकारी लेना।

सारणी क्र. ३.३.१ [आगे शुरू...]

अ.नं.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
७.	९	बद्ध	निर्धारित उद्देश्यों को सफलता दिलाने में
	९.१	मुक्त	पाठ्यक्रम की पर्याप्तता जान लेना तथा अपर्याप्तता के कारण जान लेना।
८.	१०	बद्ध	राष्ट्रभाषा के नाते हिंदी-अध्यापन की अलग
	१०.१	मुक्त	जिम्मेदारियाँ पूर्ण करने के हाँ/नहीं के पक्ष में
	१०.२	मुक्त	मत प्राप्त करना।
९.	११	बद्ध	कुशल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम की पर्याप्तता/
	११.१	मुक्त	अपर्याप्तता को लेकर मतों को आजमाना।
	११.२	मुक्त	
१०.	१२	बद्ध	प्रात्यक्षिक कार्य की उपयुक्तता के बारे में जान-
			कारी लेना।
११.	१३	बद्ध	प्रात्यक्षिक कार्य की अनुपयुक्तता के पक्ष में कारणों
	१३.१	मुक्त	का शोध लेना।
१२.	१४	बद्ध	कुशल अध्यापक बनने में प्रत्यक्ष कार्य की कार्य-
	१४.१		नीति की मदत मिलती या नहीं इस बारे में
			जानकारी लेना।
१३.	१५	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्यकी कार्यनीति के बारे में मत लेना।
१४.	१६	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति योग्य ढंग से न होने
	१६.१	मुक्त	के कारण आजमाना तथा उन्हें ढूँढना।
१५.	१७	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य की कार्यनीति अच्छे ढंग से होने के
	१७.१	मुक्त	लिए कारण एवं सुझाव प्राप्त करना।
१६.	१८	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्यद्वारा निर्धारित उद्देश्यों की
	१८.१		सफलता के बारे में मत आजमाना।

सारणी क्र. ३.३.१ [आगे शुरू...]

अ.क्र.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
१७.	१९	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्यद्वारा निर्धारित उद्देश्यों की असफलता
	१९.१	मुक्त	के बारे में कारणों को जान लेना।
१८.	२०	बद्ध	कुशल अध्यापक बनने में कार्यनीति की पर्याप्तता
	२०.१	मुक्त	बारे में मत आजमाना एवं सुझाव प्राप्त करना।
१९.	२१	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य की मूल्यांकन बद्धति के बारे में मत
	२१.१	मुक्त	आजमाना एवं सुझाव लेना।
२०.	२२	मुक्त	अनुसंधान की दृष्टि से अन्य पहलू, सूचनाएँ प्राप्त करना।

उपर्युक्त सारणी को देखने से संपूर्ण प्रश्न उनके प्रकार, स्वरूप तथा प्रश्नों के उद्देश्य इन सभी की जानकारी मिलती है। प्रस्तुत प्रश्नावली द्वारा प्राप्त सामग्री का प्रश्नानुक्रम प्रतिसाद, संख्या, प्रतिशत के स्वरूप में प्रतिसाद उसका व्याख्यान, विवेचन प्रकरण ४ में किया गया है।

३.३.२ माध्यमिक पाठशाला के हिंदी अध्यापक के लिए प्रश्नावली :-

प्रस्तुत प्रश्नावली प्रचलित बी.एड. पाठ्यक्रम संपन्न करके जो हिंदी - अध्यापक के रूप में माध्यमिक पाठशाला में कार्यरत है, उन दस [१०] अध्यापकों को दे दी थी। जो दूर गाँव में है, उन्हें मेल से यह प्रश्नावली भेजी थी। इनमें से आठ [८] अध्यापकों ने यह प्रश्नावली भर के दी है।

प्रस्तुत प्रश्नावली में कुल ग्यारह [११] प्रश्न थे। यह प्रश्न बद्ध, मुक्त स्वरूप के थे। प्रशिक्षण काल में संपन्न पाठ्यक्रम की एक झेरॉक्स कॉपी प्रश्नावली के साथ भेज कर हिंदी अध्यापन विधि का तैद्धांतिक पाठ्यक्रम एवं प्रत्यक्ष कार्य का उपयोग उनके नीजि अध्यापन में कैसे होता, है, इसकी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। हिंदी भाषा की जिम्मेदारियाँ, उत्तरदायित्व निभाने के लिए प्रचलित पाठ्यक्रम का योगदान कैसे है ? प्रचलित पाठ्यक्रम में परिवर्तनों की आवश्यकता कैसे है ? इन बातों को लक्ष्य बनाकर इस प्रश्नावली को तज्ञों के मार्गदर्शन के बाद तैयार किया था।

प्रस्तुत प्रश्नावली का उद्देश्य सहित विश्लेषण निम्नांकित सारणी क्र. ३.३.२ में किया है।

सारणी क्र. ३.३.२

माध्यमिक पाठशाला के हिंदी-अध्यापक के लिए दी हुई प्रश्नावली का विश्लेषण

अ.नं.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
१.	I ते IV	—	अध्यापकों की सामान्य जानकारी पाने की दृष्टिसे।

तारणी क्र. ३.३.२ [आगे शुरू...]

अ.नं.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
२.	१	बद्ध	नीजि अध्यापन में हिंदी पाठ्यक्रम की उपयुक्तता के बारे में मत आजमाना।
३.	२	मुक्त	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम, प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता के बारे में मत, सुझाव प्राप्त करना।
४.	३	मुक्त	नीजि अध्यापन में पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के बारे में कारण प्राप्त करना।
५.	४	बद्ध	हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों की परीपूर्ति
	४.१	मुक्त	में उपयुक्तता तथा अनुपयुक्तता के संबंध में मत
	४.२	मुक्त	प्राप्त करना।
६.	५	मुक्त	हिंदी भाषाध्यापन के उद्देश्यों के प्रति छात्र-शिक्षकों से मार्गदर्शन के बारे में सूचनाएँ प्राप्त करना।
७.	६	मुक्त	नीजि अध्यापन कार्यशाला में संपन्न कौशलों की मदत के बारे में विचार जान लेना।
८.	७	बद्ध	हिंदी भाषाध्यापक बनने में पाठ्यक्रम का योगदान है या नहीं, यह मत आजमाना।
९.	८	मुक्त	कुशल अध्यापक बनने में, न बनने में योगदान
	९	मुक्त	कैसे है, इसके बारे में मत लेना।
१०	१०	बद्ध	पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाने, न लाने के पक्ष में मत आजमाना।

तालिका क्र. ३.३.२ [आगे शुरू...]

अनुक्रम	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
११.	११	मुक्त	पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाने के संदर्भ में सूचनाएँ प्राप्त करना।

प्रस्तुत प्रश्नावली द्वारा प्राप्त जानकारी अर्थात सामग्री का प्रश्नानुक्रम प्रतिसाद - संख्या, प्रतिशत के स्वरूप में प्रतिसाद, उसका अर्थान्वयन, विवेचन प्रकरण ४ में किया गया है।

३.३.३ अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी-अध्यापकों के लिए साक्षात्कार प्रश्नसूची :-

अनुसंधान के लिए सर्वेक्षणांतर्गत अनुसंधानकर्ता ने दस [१०] अध्यापक महा - विद्यालयों मे हिंदी अध्यापन विधि का अध्यापन करनेवाले अध्यापकों से साक्षात्कार किया। इस साक्षात्कार के दौरान् ही साक्षात्कार प्रश्नसूची की पूर्ति की गयी थी। प्रस्तुत प्रश्नसूची में चौदह प्रश्नों की रचना की थी। इन में कई प्रश्न बद्ध थे, कई मुक्त तो कई संमिश्र स्वरूप के थे। यह प्रश्नसूची भी दो विभागों में विभाजित थी। पहले भाग में सैद्धांतिक पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न थे। ए प्रश्न सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की उपयुक्तता निर्धारित उद्देश्यों की सफलता, कुशल अध्यापक बनने में पाठ्यक्रम का योगदान, पाठ्यक्रम की त्रुटियाँ, परिवर्तनों के लिए उपाय, सुझाव आदि को लक्ष्य मानकर पुछे गये थे। दूसरे विभाग में प्रत्यक्ष कार्य, उसकी कार्यनीति, निर्धारित उद्देश्यों की सफलता, संगठन आदि के बारे में प्रश्नों की रचना की गयी थी। अनुसंधान संबंधित तथा पाठ्यक्रम सर्वांगपरिपूर्ण हो इसके

लिए भेटवार्ता की तथा सूचनाएँ, सुझावों की प्राप्ति भी की गई थी। इस प्रश्न-सूचि का उद्देश्य सहित विश्लेषण तारणी क्र. ३.३.३ में दिया गया है।

तारणी क्र. ३.३.३

अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी-अध्यापकों के लिए साक्षात्कार के दरम्यान दी हुई प्रश्न-सूची का विश्लेषण

अ.नं.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
१.	I से V	-	अध्यापकों की सामान्य जानकारी प्राप्त करना।
२.	१	बद्ध	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम की उपयुक्तता कुशल अध्यापक बनने में कितनी है, यह जान लेना।
३.	२	बद्ध	पाठ्यक्रम की अनुपयुक्तता के संबंध में कारण ढूँढना तथा उपयुक्त बनाने के हेतु सुझाव प्राप्त करना।
	२.१	मुक्त	
	३	मुक्त	
४.	४	बद्ध	सैद्धांतिक घटकों द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की सफलता के बारे में मत आजमाना।
५.	५	बद्ध	उद्देश्य असफल होने के कारण ढूँढना तथा उन्हें सफल बनाने के उपाय, अन्य घटक के बारे में
	५.१	मुक्त	
	६	मुक्त	जानकारी प्राप्त करना।
६.	७	बद्ध	सैद्धांतिक पाठ्यक्रम के परिवर्तन के विषय में मत
	७.१	मुक्त	आजमाना। तथा परिवर्तन के लिए सुझाव प्राप्त
	७.२	मुक्त	करना।
७.	८	बद्ध	कुशल अध्यापक बनने में प्रत्यक्ष कार्य की उपयुक्तता की जाँच करना।

सारणी क्र. ३.३.३ [आगे शुरू...]

अ.नं.	प्रश्न क्र.	प्रश्न का स्वरूप	प्रश्न का उद्देश्य
८.	९	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य की अनुपयुक्तता के संबंध में कारण
	९.१	मुक्त	ढूँढना।
९.	१०	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्यकी कार्यनीति अच्छे ढंग से होने के
	१०.१	मुक्त	संबंध में मत आजमाना।
१०.	११	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य द्वारा उद्देश्यों की सफलता के
	११.१	बद्ध	बारे में मत आजमाना।
११.	१२	बद्ध	प्रत्यक्ष कार्य द्वारा उद्देश्यों के असफलता के
	१२.१	मुक्त	बारे में कारण खोजना।
१२.	१३	मुक्त	उद्देश्यों को सफल करने के लिए अन्य परिवर्तना-त्मक प्रत्यक्ष कार्य का समावेश करने की आव-श्यकता के संदर्भ में जानकारी लेना।
१३.	१४	मुक्त	अनुसंधान विषय के संदर्भ में सूचनाएँ और सुझाव प्राप्त करना।

इन तीनों प्रश्नावलीयों द्वारा तथा भेटवार्ता एवं साक्षात्कार से प्रस्तुत अनुसंधान के लिए अत्यंत उपयुक्त जानकारी पाने का प्रयास किया गया है। यह जानकारी देने में जिन चौरासी [८४] छात्राध्यापक, दस [१०] हिंदी - अध्यापन विधि का अध्यापन करनेवाले अध्यापक तथा प्रशिक्षणोत्तर आठ [८] सेवारत हिंदी भाषाध्यापक ने योगदान दिया। उनकी सूची अनुक्रम से परिशिष्ट-

- 3) परिशिष्ट-ब और परिशिष्ट-क, में दी है।

3.४ प्रश्नावलियों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण की पद्धति :-

उपर्युक्त तीनों प्रश्नावलीयों द्वारा संकलित सामग्री का वर्गीकरण किया गया है। इसमें क्र. १ की छात्रशिक्षकों के लिए प्रश्नावली संपूर्ण भर के जिन्हों ने दी, उनकी सामान्य जानकारी [प्रथम पृष्ठ के I - V] की सूची बनाई गई है, जो परिशिष्ट १.१ में दी गई। कुल चौरासी [८४] छात्रशिक्षकों ने यह प्रश्नावली भर दे दी थी। प्रश्नावली के बाईस प्रश्नों का वर्गीकरण सारणी क्र.3-3-१ में दिया गया है। इसमें प्रत्येक प्रश्न को मिली हुअी प्रतिसाद संख्या तथा उसका कितना प्रतिशत-प्रतिसाद रूप में रूपांतर होता है, इसकी जानकारी प्रकरण ४ में देखने से मिलती है। इनके आधारपरही दस प्रतिशत से ज्यादा प्रतिसाद जिन प्रश्नों को मिला है, उन्हीं का अर्थान्वयन किया गया है एवं निष्कर्ष निकाले गये है। दस प्रतिशत से कम प्रतिशत प्रतिसादों को निर्देशातीय नहीं माना गया है। प्रकरण चार में हर प्रश्न का वर्गीरण विश्लेषण एवं अर्थान्बयन किया गया है।

इसमें से क्र. २ की प्रश्नावली " माध्यमिक पाठशाला के हिंदी - अध्यापक के लिए प्रश्नावली " बनाई थी। यह प्रश्नावली आठ अध्यापकों ने संपूर्ण भर दे दी थी। उनकी सामान्य जानकारी [प्रथम पृष्ठ के मधे I - IV] की सूची बनाई गई है। जो परिशिष्ट क, २ में दी गई है। इस प्रश्नावली में कुल ग्यारह [११] प्रश्न थे। इसमें से कुछ प्रश्न बद्ध स्वरूप के थे, तो कुछ मुक्त स्वरूप के थे। इसमें से प्रत्येक प्रश्न को मिला हुआ प्रतिसाद तथा उसका प्रतिशत में रूपांतर होने वाली मांग, इसकी जानकारी आधारपरही दस [१०] प्रतिशत से ज्यादा प्रतत्साद जिन प्रश्नों को मिला है, उन्हीं का अर्थान्बयन किया गया है,

एवं निष्कर्ष लिकाले गये है। दस प्रतिशात से कम प्रतिसादों को निर्देशानीय नहीं माना गया है। प्रकरण चार में प्रत्येक प्रश्न का वर्गीकरण विश्लेषण एवं अर्था - न्वयन किया गया है।

इसके अलावा अध्यापक महाविद्यालयीन हिंदी अध्यापकों से साक्षात्कार एवं भेटवार्ता की गयी। इस साक्षात्कार के समय एक साक्षात्कार प्रश्न-सूची भी संपन्न की गयी। कुल दस [१०] अध्यापकों से साक्षात्कार किया गया तथा प्रश्न-सूची की पूर्ति भेटवार्ता के दरम्यान ही की गई है। इस प्रश्न सूची में कुल चौदह [१४] प्रश्न थे। ये प्रश्न बद्ध तथा मुक्त स्वरुप के थे। इस प्रश्नावली द्वारा अध्यापकों की सामान्य जानकारी " प्रथम पृष्ठ के मद्दे [1-V] द्वारा प्राप्त की गई है। यह जानकारी परिशिष्ट २.१ में दी गयी है। प्रश्न-सूची द्वारा प्रत्येक प्रश्न को मिले हूये प्रतिसाद की जानकारी के आधारपरही दस [१०] प्रतिशात ये ज्यादा प्रतिसाद जिन प्रश्नों को मिला है, उन्हीं का अर्थान्वयन किया गया है, एवं निष्कर्ष लिकाले गये है। दस प्रतिशात से कम प्रतिसादों को खास निर्देशानीय नही माना गया है। प्रकरण चार में प्रत्येक प्रश्न का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं अर्थान्वयन किया गया है।

३.५ अनुसंधान कार्य का क्षेत्र :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय संलग्नित एक वर्षीय बी.एड. का पाठ्यक्रम परिचालीन करनेवाले अध्यापक महाविद्यालयों के छात्रअध्यापक तथा अध्यापकों को सामने रखा गया था। इनमें से सिर्फ कोल्हापुर जिले के क्षेत्र में आनेवाले तेरह अध्यापक महाविद्यालयों का चुनाव किया गया था।

कोल्हापुर शहर में स्थित चार अध्यापक महाविद्यालय, तथा जिलां - तर्गत अलग गाँव एवं तालुक में स्थित, गडहिंग्लज के दो, गारगोटी के एक, जयसिंगपुर के एक, कागल के एक, रुकडी के एक, कोडोली के एक, पेठवडगाव के एक, इचलकरंजी के एक मिलकर नौ अध्यापक महाविद्यालयों को अनुसंधान कार्यक्षेत्र के लिए चुनाव किया था। इन महाविद्यालयों की सूची निम्नांकित दी है। -

तारणी क्र. ३.५.१

अनुसंधान कार्यक्षेत्र में समावेशित अध्यापक महाविद्यालयों की सूची

अ. नं.	अध्यापक महाविद्यालय का नाम.
१.	श्रीमती महाराणी ताराबाई कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, कोल्हापुर.
२.	बसंतराव नाईक शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कोल्हापुर.
३.	सावित्रिबाई फुले महिला शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कोल्हापुर.
४.	बाळासाहेब गणपतराव खराडे शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कोल्हापुर.
५.	कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, पेठवडगाव, ता- हातकणंगले, जि- कोल्हापुर.
६.	यशवंत शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, कोडोली, ता-पन्हाळा, जि- कोल्हापुर.
७.	छत्रपति शिवाजी कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, रुकडी, ता-हातकणंगले, जि- कोल्हापुर.
८.	इचलकरंजी शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, व्यंकोबा मैदान, इचलकरंजी, जि- कोल्हापुर.
९.	कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, कागल, जि- कोल्हापुर.

सारणी क्र. ३.५.१ [आगे शुरू...]

अ.नं.	अध्यापक महाविद्यालय का नाम
१०.	कल्पवृक्ष शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, मेन रोड, जयसिंगपुर, जि- कोल्हापुर.
११.	जागृति शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, गडहिंग्लज, जि-कोल्हापुर.
१२.	डी.के. शिंदे शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, गडहिंग्लज, जि-कोल्हापुर.
१३.	आचार्य जावडेकर शिक्षणशास्त्र महाविद्यालय, गारगोटी, जि- कोल्हापुर.

अनुसंधान कार्य के लिए चुना गया कोल्हापुर जिले का क्षेत्र एवं महाविद्यालयों के नंबर आगे नकाशो में दिये गये है।

शिवाजी विश्वविद्यालय से संलग्नित अठ्ठाईस महाविद्यालयों में एक वर्षीय बी.एड. के पाठ्यक्रम का तथा दो महाविद्यालयों मे चार वर्षीय बी.बी.एड. पाठ्यक्रम का परिचालन होता है। अनुसंधानकर्ति ने सिर्फ एक कोल्हापुर जिले के अध्यापक महाविद्यालय चुने थे, चूँकि शिवाजी विश्वविद्यालय संलग्नित एक वर्षीय बी.एड. अध्यापक महाविद्यालयों में से करीबन पच्चास प्रतिशत [१३ महाविद्यालय] कोल्हापुर जिले में ही स्थित है। अत: इस कार्यक्षेत्र द्वारा प्राप्त सामग्री उचित रूप से प्रतिनिधित्व करनेवाली ही हो सकती है।

इन्ही महाविद्यालयों के हिंदी विधि के अध्यापकों का चुनाव साक्षात्कार एवं भेट योजना के लिए भी किया गया था।

अनुसंधानकर्ति स्वयं कोल्हापुर शहर की निवासी होने से अनुसंधान - कार्य के लिए प्रस्तुत क्षेत्र को चुना था, ताँकि सहूलियत मिले।

३.६ अनुसंधान कार्य का न्यादर्श :-

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए पूर्ण जनसंख्या के रूप में, शिवाजी विश्वविद्यालय संलग्नित अठ्ठाईस [२८] अध्यापक महाविद्यालयों मे हिंदी अध्यापन विधि का अध्ययन करनेवाले छात्रशिक्षकों, हिंदी-अध्यापन-विधि का अध्यापन करनेवाले अध्यापकों को तथा सन १९९२-९३ का पाठ्यक्रम पुरा करके उत्तीर्ण एवं सेवारत उपलब्ध दस [१०] हिंदी भाषाध्यापक निर्धारित किये थे।

इनमें से सिर्फ कोल्हापुर जिलांतर्गत तेरह [१३] अध्यापक महाविद्यालयों में " हिंदी-अध्यापन-विधि " का अध्ययन करनेवाले छात्रशिक्षक करीबन एक सौ चालीस [१४०] एवं हिंदी-अध्यापन-विधि का अध्यापन करनेवाले अध्यापक तथा प्रचलित नया पाठ्यक्रम १९९२-९३ का पूर्ण कर उत्तीर्ण हुए सेवामें कार्यरत उपलब्ध दस [१०] माध्यमिक पाठशालाके हिंदी-भाषाध्यापक को नमुना अर्थात "न्यादर्श" के तौरपर चुना गया था।

न्यादर्श में चुनावित कोल्हापुर जिले के तेरह [१३] अध्यापक महा - विद्यालयों की सूची उपर्युक्त सारणी क्र. ३.५.१ में दी गई है। उपर्युक्त चर्चित न्यादर्श घटकों द्वारा प्राप्त की गयी सामग्री द्वारा अनुसंधान कार्य को एक सबल दिशा मिली है, जिससे अनुसंधान कार्य के उद्देश्य सबल होने में मदद मिली है। अत: प्रस्तुत न्यादर्श प्रातिनिधिक बनने में सहायता मिली है।

३.७ समारोप :-

प्रस्तुत प्रकरण में अनुसंधान कार्य की पद्धति, साधन इन साधनोंद्वारा प्राप्त सामग्री उनके वर्गीकरण एवं विश्लेषण की पद्धति, अनुसंधान कार्यक्षेत्र, अनुसंधान कार्य के लिए न्यादर्श आदि के बारे में विवेचन किया है।